'माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा नव सृजित पाठ्यपुस्तक 'प्रबोधिनी' (हिन्दी, कक्षा–नौ, संस्करण 2016) का समीक्षात्मक अध्ययन'

जगदीश चन्द्र आमेटा
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
विद्या भवन गोविन्दराम सेकसरिया शिक्षक महाविद्यालय (सी.टी.ई.),
उदयपुर, राजस्थान

सारांश

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा नव सृजित पाठ्यपुस्तक 'प्रबोधिनी' का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया। इससे कतिपय नये तथ्य प्राप्त हुए हैं। ये तथ्य हैं। तथ्य सदैव सत्य नहीं होते हैं। उन तथ्यों को सत्यता की कसौटी पर परखा जाना चाहिए। यह लघुशोध सीमित संसाधनों के परिसीमन में किया गया है। अतः इससे प्राप्त निष्कर्ष-तथ्यों को प्रथम दृष्टया सही मानकर भावी शोधार्थी सम्बन्धित साहित्य के रूप में इसका अनुप्रयोग कर सकते हैं। इन प्राप्त निष्कर्षों को व्यापक स्तर पर परखा जाना चाहिए। भावी शोधार्थी इस शोध को सम्बन्धित साहित्य मानकर अपनी शोध दिशा तय करने में इसे भी एक अवलम्बन समझते हैं तो शोधकर्त्ता स्वयं को धन्य समझेगा। यही शोधकर्त्ता की सफलता की कसौटी है।

मुख्य शब्द : 'प्रबोधिनी', उच्च माध्यमिक स्तर

प्रस्तावना

पाठ्यपुस्तक और शिक्षण में अभिन्न सम्बन्ध है। उच्च माध्यमिक स्तर तक तो भाषा के विषय में पाठ्यपुस्तक के बिना शिक्षण की कल्पना भी हास्य की विषय-वस्तु लगती है। शिक्षा के सम्प्रेषण और अधिगम के मध्य पाठ्यपुस्तक ही एक श्रेष्ठ संवाहक संसाधन की भूमिका का निर्वहन कर सकती है। एक परिमार्जित और मानक पाठ्यपुस्तक यह जिम्मेदारी बखूबी निभाती है। अतः यह पुनरुल्लेख किया जा सकता है कि पाठ्यपुस्तक और शिक्षण में प्रगाढ़ सम्बन्ध है।

मानक पाठ्यपुस्तक हेतु पुनरवलोकन अनिवार्य है। मानक पाठ्यपुस्तक के बिना शिक्षण की स्थिति विशिष्ट से विचित्र होने लगती है। यदि शिक्षा में पाठ्यपुस्तक की परवाह किए बिना शिक्षण व्यवहृत होता है तो सम्प्रेषण–अधिगम की प्रक्रिया भी हास्यस्पद बन जाती है। भाषा के शिक्षक हेतु तो पाठ्यपुस्तक अपरिहार्य है। पाठ्यपुस्तक से शिक्षण प्रक्रिया को सही दिशा और दशा मिलती है।

विद्यालयों के हिन्दी शिक्षकों के समक्ष मानक पाठ्यपुस्तक का यक्ष प्रश्न सदैव उपस्थित रहता है। हिन्दी भाषा शिक्षकों के लिए पाठ्यपुस्तक कर्त्तव्य और दायित्व निर्वहन में अनिवार्य आधार है। हिन्दी पाठ्यपुस्तक को पुनरवलोकन की कसौटी पर परखे बिना शिक्षक अपने हिन्दी भाषा के शिक्षार्थियों के साथ संभवतः न्याय नहीं कर पाते हैं। शोधकर्त्ता ने हिन्दी विषय के शिक्षकों के मानस-पटल पर यही प्रश्न चिह्न अंकित करने का प्रयास किया है कि माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा नव सृजित पाठ्यपुस्तक 'प्रबोधिनी' (हिन्दी, कक्षा–नौ, संस्करण 2016) के बारे में उनके क्या अभिमत है? यदि 'प्रबोधिनी' पर कोई प्रश्न चिह्न लगता है तो शोधकर्त्ता उसे पूर्णविराम और सकारात्मक विस्मयादिबोधक चिह्न में बदलने हेतु सम्बन्धित पक्षों को शिक्षकों के अभिमतों के आधार पर सुझाव सम्प्रेषित करेगा। शोधकर्त्ता का यही विनम्र प्रयास है।

समस्या कथन

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा नव सृजित पाठ्यपुस्तक 'प्रबोधिनी' (हिन्दी, कक्षा–नौ, संस्करण 2016) का समीक्षात्मक अध्ययन

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का निम्नांकित उद्देश्य है –

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा नव सृजित पाठ्यपुस्तक 'प्रबोधिनी' (हिन्दी, कक्षा–नौ, संस्करण 2016) की समीक्षा करके विशेषज्ञों के परामर्शानुसार आगामी संस्करण को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु सुझाव देना।

संबन्धित साहित्य

1. टांक,रमेश चन्द्र (2001), माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान की कक्षा 9 व 10 की संस्कृत का समीक्षात्मक अध्ययन, लघुशोध प्रबन्ध, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर।
2. पटेल, अल्पा एस. (2005) ईडर तहसील के माध्यमिक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की हिन्दी पाठ्यचर्या के प्रति अभिवृति एवं अधिगम कठिनाइयों का अध्ययन।
   (प्रस्तुत कार्य शोधार्थी का मौलिक कार्य है। इस विषय पर अभी तक शोधार्थी की अधिकतम जानकारी के अनुसार कोई कार्य नहीं हुआ है।)

न्यादर्श चयन

न्यादर्श चयन इस प्रकार किया गया –

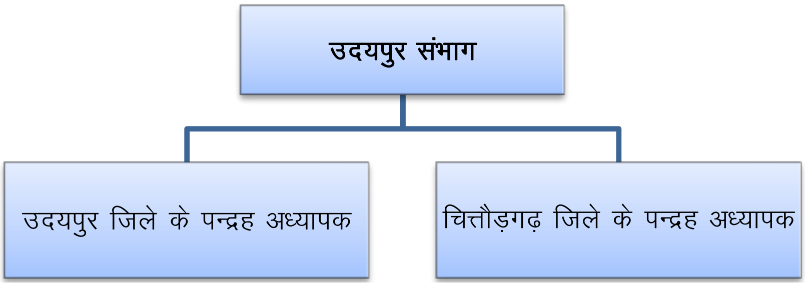
उदयपुर संभाग
उदयपुर जिले के पन्द्रह अध्यापक
चित्तौड़गढ़ जिले के पन्द्रह अध्यापक

अध्ययन विधि

जिस शोधकार्य का उद्देश्य तात्कालिक परिस्थितियों का अध्ययन और उसकी व्याख्या करना होता है, वहाँ 'सर्वेक्षण विधि' उपयुक्त रहती है। अतः शोधकर्त्ता ने प्रस्तुत विधि का चयन किया।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध नहीं होने से स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण का अनुप्रयोग करना निश्चय किया गया, जिसे विशेषज्ञों के परामर्शानुसार मानकीकृत किया।

समस्या कथन

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा नव सृजित पाठ्यपुस्तक 'प्रबोधिनी' (हिन्दी, कक्षा–नौ, संस्करण 2016) का समीक्षात्मक अध्ययन पारिभाषिक शब्द की पारिभाषिक शब्दावली प्रस्तुत है –

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

यह बोर्ड राजस्थान में उच्च माध्यमिक स्तर तक पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक और संबद्ध परीक्षा के प्रबंधन और संचालन का कार्य करता है।

पाठ्यपुस्तक – यह पाठ्यक्रम के अनुसार सृजित वह पुस्तक होती है, जिसे शिक्षण का आधार बनाया जाता है।

प्रबोधिनी

यह माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा कक्षा–नौ और विषय हिन्दी हेतु नव सृजित पाठ्यपुस्तक (संस्करण 2016) है।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ

इस समस्या-अध्ययन में दत्तों का विश्लेषण करने के लिए निम्नांकित सांख्यिकीय प्रविधियों का चयन किया गया है :–

1. प्रतिशत
2. आरेखीय निरुपण

समग्र विश्लेषण

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा नव सृजित पाठ्यपुस्तक 'प्रबोधिनी' (हिन्दी, कक्षा–नौ, संस्करण 2016) का चयनित बीस क्षेत्रों में 'कुल अभिमतों' की दृष्टि से समीक्षात्मक अध्ययन करने पर जो निष्कर्ष प्राप्त हुए, उन्हें प्रस्तुत तालिका और आरेख द्वारा दर्शाया जा रहा है–

'प्रबोधिनी' (हिन्दी, कक्षा–नौ, संस्करण 2016) का कुल अभिमतों की दृष्टि से समीक्षात्मक अध्ययन

	पूर्णतः सहमत	प्रायः सहमत	आंशिक सहमत	असहमत	अनिश्चित	योग
प्राप्त अभिमतों की संख्या	231	240	82	39	08	600
प्राप्त अभिमतों का प्रतिशत	38.50	40.00	13.67	6.50	1.33	100

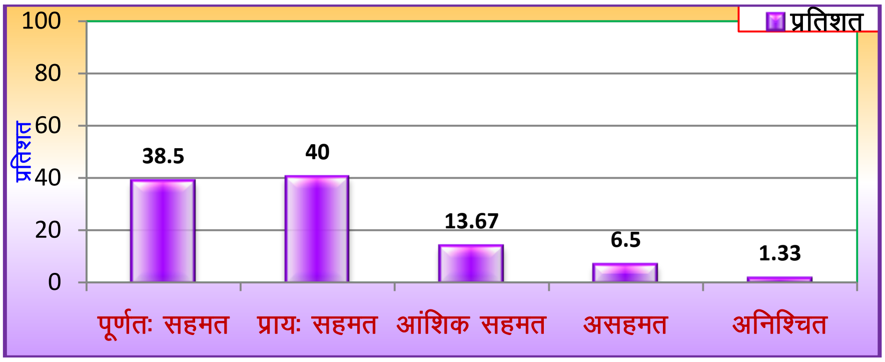

प्रासंगिकता

वर्तमान युग में शिक्षक की भूमिका का निर्वहन क्रमशः और अधिक चुनौतीपूर्ण बनता जा रहा है। शिक्षार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं के साथ-साथ तेजी से बदलते सामाजिक परिदृश्य ने शिक्षक के दायित्व को कठिन से कठिनतर कर दिया है। ऐसे में शिक्षक को अपने ज्ञान-कौशल को अद्यतन बनाये रखना बेहद अनिवार्य है। जहाँ तक भाषा के शिक्षक की बात है, वे इस दृष्टि से बहुत-कुछ पाठ्यपुस्तक पर आधृत है। फलतः पाठ्यपुस्तक को मानक और अद्यतन करने हेतु उसका समीक्षात्मक अध्ययन अपरिहार्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

पुस्तकें

1. *कुमार, डॉ. अरविन्द (2012), सम्पूर्ण हिन्दी व्याकरण और रचना, पटना। लूसेंट पब्लिकेशन।*
2. *जोशी, डॉ. ब्रजरतन (2010), हिन्दी व्याकरण सार, जयपुर। पत्रिका प्रकाशन।*
3. *ढौंडियाल, सच्चिदानन्द एवं अरविन्द फाटक (पुनर्संस्करण, 2003), शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, जयपुर। राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।*
4. *नागर, कैलाश नाथ (1993), सांख्यिकी के मूल तत्त्व, मेरठ। मीनाक्षी प्रकाशन।*
5. *'भावी', रतन लाल गोयल एवं डॉ. भगवती लाल व्यास (2003), नवीन हिन्दी व्याकरण एवं रचना, अजमेर।अल्का पब्लिकेशंस।*
6. *मंगल, डॉ. अंशु एवं अन्य (पुनर्संस्करण, 2011), शैक्षिक अनुसन्धान की विधियाँ, समंक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी, आगरा।राधा प्रकाशन मंन्दिर प्रा.लि.।*
7. *शर्मा, महेश प्रसाद (2007), हिन्दी प्रभा व्याकरण एवं रचना, मथुरा। मीतल पब्लिशिंग हाऊस।*
8. *सक्सैना एन.आर. एवं अन्य (पुनर्संस्करण, 2003), अध्यापक शिक्षा, मेरठ। सूर्या पब्लिकेशन।*

रपट

1- *Report of Education Commission (1964-66), Education Commission of India.*